मफ़ातीहुल जिनान

(जन्नत की चाबियाँ)

शेख़ अब्बास क़ुम्मी

पहली जिल्द

दुआएं व हर महीने के आमाल

हिन्दी अनुवाद : सैयद अत्हर हुसैन रिज़्वी

व बाक़ियातुस सालिहात (जिल्द १)

प्रकाशन :

क़ुरान के सूरेह

सूरह यासीन

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

یٰسٓ ﴿۱﴾ وَالۡقُرۡاٰنِ الۡحَکِیۡمِ ﴿۲﴾ اِنَّکَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ﴿۳﴾ عَلٰی صِرَاطٍ

यासीन। कुर्आने हकीम की कसम। आप मुर्सलीन में से हैं। बिल्कुल सीधे रास्ते पर हैं। यह कुर्आन खुदाए अज़ीज़

مُّسۡتَقِیۡمٍ ﴿۴﴾ تَنۡزِیۡلَ الۡعَزِیۡزِ الرَّحِیۡمِ ﴿۵﴾ لِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّاۤ اُنۡذِرَ

और महेरबान का नाज़िल किया हुआ है। ताकि आप उस कौम को डराएं जिस के बाप दादा को किसी पैगम्बर के

اٰبَآؤُهُمۡ فَهُمۡ غٰفِلُوۡنَ ﴿۶﴾ لَقَدۡ حَقَّ الۡقَوۡلُ عَلٰۤی اَکۡثَرِهِمۡ فَهُمۡ لَا

ज़रिए नहीं डराया गया तो सब गाफिल ही रह गए। यकीनन उसकी अकसरीयत पर हमारा अज़ाब साबित हो गया तो

یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۷﴾ اِنَّا جَعَلۡنَا فِیۡۤ اَعۡنَاقِهِمۡ اَغۡلٰلًا فَهِیَ اِلَی الۡاَذۡقَانِ فَهُمۡ

वह ईमान लाने वाले नहीं हैं। हम ने उनकी गर्दन में तौक डाल दिए हैं जो उनकी ठुड्डीयों तक पहुँचे हुए हैं कि वह गर्दनें

مُّقۡمَحُوۡنَ ﴿۸﴾ وَجَعَلۡنَا مِنۡۢ بَیۡنِ اَیۡدِیۡهِمۡ سَدًّا وَّمِنۡ خَلۡفِهِمۡ سَدًّا

उठाए हुए हैं (सर झुका नहीं सकते)। और हम ने एक दीवार उन के सामने और एक दीवार उनके पीछे बना दी है और

فَاَغۡشَيۡنٰهُمۡ فَهُمۡ لَا يُبۡصِرُوۡنَ ۝٩ وَسَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ءَاَنۡذَرۡتَهُمۡ اَمۡ

फिर उनहें अज़ाब से ढांक दिया है के वह कुछ देखने के काबिल नहीं रह गए हैं। और उनके लिए सब बराबर है आप

لَمۡ تُنۡذِرۡهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝١٠ اِنَّمَا تُنۡذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكۡرَ وَخَشِىَ

उन्हें डराएं या न डराएं यह इमान लाने वाले नहीं हैं। अब सिर्फ उन लोगों को डरा सकते हैं जो नसीहत की पयरवी

الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَيۡبِ‌ۚ فَبَشِّرۡهُ بِمَغۡفِرَةٍ وَّاَجۡرٍ كَرِيۡمٍ ۝١١ اِنَّا نَحۡنُ نُحۡىِ

करें और बगैर देखे गैब से खुदा से डरते रहें उन ही लोगों को आप मगफेरत और इज़्ज़त के साथ अज्र की बशारत दे

الۡمَوۡتٰى وَنَكۡتُبُ مَا قَدَّمُوۡا وَاٰثَارَهُمۡ‌ ؕ وَكُلَّ شَىۡءٍ اَحۡصَيۡنٰهُ فِىۡٓ

दें। बेशक हम ही मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और उन के पीछले आअमाल और उन के आसार को लिखते जाते हैं और

اِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ۝١٢ وَاضۡرِبۡ لَهُمۡ مَّثَلًا اَصۡحٰبَ الۡقَرۡيَةِ‌ۘ اِذۡ جَآءَهَا

हम ने हर चीज़ को एक रौशन इमाम में जमा कर दिया है। और पैगम्बर आप उन से मिसाल के तौर पर उस गांव वालों

الۡمُرۡسَلُوۡنَ ۝١٣ اِذۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهِمُ اثۡنَيۡنِ فَكَذَّبُوۡهُمَا فَعَزَّزۡنَا

का तज़केरा करें जिन के पास हमारे रसूल आए। इस तरह के हम ने दूसरों को भेजा तो उन लोगों ने झुठला दिया तो

بِثَالِثٍ فَقَالُوۡۤا اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ مُّرۡسَلُوۡنَ ۝١٤ قَالُوۡا مَاۤ اَنۡتُمۡ اِلَّا بَشَرٌ

हम ने उन की मदद को तीसरा रसूल भी भेजा और सब ने मिल कर एलान किया कि हम सब तुम्हारी तरफ भेजे गए

مِّثۡلُنَا‌ۙ وَمَاۤ اَنۡزَلَ الرَّحۡمٰنُ مِنۡ شَىۡءٍ‌ۙ اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا تَكۡذِبُوۡنَ ۝١٥

हैं। उन लोगों ने कहा तुम सब हमारे ही जैसे आदमी हो और रहमान ने किसी चीज़ को नाज़िल नहीं किया तुम सिर्फ

قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ﴿۱۶﴾ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ

झुठ बोरते हो। उन्हों ने जवाब दिया कि हमारा परवरदिगार जानता है कि हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं। हमारी

الْمُبِيْنُ﴿۱۷﴾ قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ

ज़िम्मेदारी सिर्फ खुले तौर पर पैगाम पहुँचाना है। उन लोगों ने कहा कि हमें तुम मन्हूस मालूम होते हो अगर अपनी

وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ﴿۱۸﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ اَئِنْ

बातों से बाज़ न आए तो हम संगसार कर देंगे और हमारी तरफ से तुम्हें सख्त सज़ा दी जाएगी। इन लोगों ने कहा कि

ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ﴿۱۹﴾ وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ

तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ क्या यह याददहानी कोई नहूस्त है हकीकत यह है कि तुम ज़ियादती करने वाले लोग हो।

رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَۙ﴿۲۰﴾ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا

और शहर के एक छोर से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया और उसने कहा कि राष्ट्र वालों मुर्सलीन की इत्तेबा करो।

يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ﴿۲۱﴾ وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ

उनका इत्तेबा करो जो तुम किसी तरह मजदूरी का सवाल नहीं करते हैं और मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे हैं। और मुझे क्या

وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ﴿۲۲﴾ ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا

हो गया है कि मैं उसकी इबादत न करूँ जो मुझे बनाया है और तुम सब उसी की बारगाह में पल्टाए जाओगे। मैं इसके

تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ﴿۲۳﴾ ۚ اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ

अलावा अन्य खुदा इख्तेयार कर लूं जबकि वह मुझे नुकसान पहुंचाना चाहे तो किसी की सिफारिश काम आने वाली

مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ

नहीं है और न कोई बचा सकता है। मैं तो उस समय खुली हुई गुमराही में हो जाऊँगा। मैं तुम्हारे खुदा पर विश्वास

يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

लाया तो तुम मेरी बात सुनो। परिणाम में इस बंदे से कहा गया कि स्वर्ग में जाए, तो उसने कहा कि ऐ काश मेरे लोगों

(23) ﴿٢٨﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا

को भी पता होता। कि मेरे परवरदिगार ने कैसे बख्श दिया है और मुझे सम्मानित लोगों में करार दिया है। और हम

كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾

उसकी क़ौम पर न आकाश से कोई लश्कर भेजा है और न हम लश्कर भेजने वाले थे। वह तो केवल एक चिंगाड थी

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ

जिसके बाद सब की लौ हयात ठंड पड़ गया। कितनी हसरतनाक है इन बंदों का हाल कि जब उनके पास कोई रसूल

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ

आता है तो उसका मजाक उड़ाने लगते हैं। उन लोगों ने नहीं देखा कि हम पहले कितनी कौमों को मार दिया है जो

اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾ وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰيَةٌ

अब उनकी ओर पलट कर आने वाली नहीं हैं। और फिर सब एक दिन इकट्ठा हमारे पास हाज़िर किए जाएंगे। और

لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۖ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ

उनके लिए हमारी एक निशानी यह मृत जमीन भी है जिसे हम ने जीवित किया है और इसमें दाने निकाले हैं जिनमें से

يَأْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا

ये लोग खा रहे हैं। और उसी जमीन में खजूर और अंगूर के बगीचे पैदा किए हैं और चश्मे जारी किए हैं। ताकि यह

مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾ لِيَأْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا

फल खाएं हालांकि यह सब उनके हाथों का अमल नहीं है फिर आखिर यह हमारा शुक्रिया क्यों नहीं अदा करते हैं।

يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ

पाक व बेनियाज़ है वह खुदा जो सभी जोड़ों को बनाया है इन चीज़ों में से जिन्हें पृथ्वी उगाती है और उनके नकशों में

وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۖ نَسْلَخُ مِنْهُ

से और उन चीज़ों में से जिनका उन्हें इल्म भी नहीं है। और उनके लिए एक निशानी रात है जिसमें से हम खींचकर

النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ

दिन निकाल लेते हैं तो यह सब अंधेरे में चले जाते हैं। और सूरज अपने केंद्र पर दौड़ रहा है कि यह ख़ुदा अजीज व

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ

अलीम की निश्चित की हुई हरकत है। और चाँद के लिए हमने मंज़िलें निश्चित कर दी हैं जब तक वे अंत में पलट कर

كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَ

खजूर की सूखी टहनी जैसा हो जाता है। न आफताब के बस में है कि चाँद को पकड़ ले और रात के लिए संभव है कि

لَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا

वे दिन से आगे बढ़ जाए और यह सब अपने अपने फलक और मदार में तैरते रहते हैं। और उनके लिए हमारी एक

حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهِ مَا

निशानी यह भी है कि हम अपने बुज़ुर्गों को एक भरी हुई नाव में उठाया है। और नाव जैसी और कई चीजें पैदा की हैं

يَرْكَبُونَ ﴿٤٢﴾ وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنقَذُونَ ﴿٤٣﴾

जिन पर यह सवार होते हैं। और अगर हम चाहें तो सबको डूबा दें फिर न कोई उनका फरियाद रस पैदा होगा और न

إِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٤﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ

यह बचाए जा सकेंगे। मगर यह कि खुद हमारी दया शामिल हाल हो और हम एक मुद्दत तक आराम करने दें। और

أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ

जब उनसे कहा जाता है कि इस उज़ाब से डरो जो सामने या पीछे से आ सकता है शायद कि तुम पर दया हो। तो उनके

آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٦﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا

पास खुदा की निशानीयों में से कोई निशानी नहीं आती है मगर यह कि यह किनाराकशी इख्तेयार कर लेते हैं। और

رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۙ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ

जब कहा जाता है कि जो रिज़्क खुदा ने दिया है उसमें से उसकी राह में खर्च करो तो यह कुफ़्फ़ार इमान से तन्ज़िया

يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ ۖ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ

तौर से कहते हैं कि हम उन्हें क्यों खलाएं जिन्हें खुदा चाहता तो खुद ही खिला देता तुम लोग तो खुली हुई गुमराही में

هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً

मुब्तेला हो। और फिर कहते हैं कि आखिर यह वादए कयामत कब पूरा होगा अगर तुम लोग अपने वादे में सच्चे हो।

تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى

दरअसल यह सिर्फ एक चिंगाड का इंतजार कर रहे हैं जो उन्हें अपनी चपेट में ले लेगी और यह झगड़ा ही करते रह

اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى

जाएंगे। फिर न कोई वसीयत कर पाएंगे और न अपने परिवार की तरफ पलट कर ही जा सकेंगे। और फिर जब सूर

رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا

फूंका जाएगा तो सब के सब अपनी कब्रों से निकल कर अपने परवरदिगार की तरफ चल खड़े होंगे। कहेंगे कि

وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً

आखिर यह हमें हमारी ख्वाबगाह से किसने उठा दिया है वास्तव में यही वह चीज है जिसका खुदा ने वादा किया था

فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا

और उसके रसूलों ने सच कहा था। क़यामत तो केवल एक चिंगाड़ है उसके बाद सब हमारी बारगाह में हाज़िर कर

وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ

दिए जाएंगे। फिर आज के दिन किसी नफ्स पर किसी तरह का अन्याय नहीं किया जाएगा और तुम को बस वैसा ही

شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ

बदला दिया जाएगा जैसे कार्यों को तुम कर रहे थे। वास्तव जन्नत के लोग आज के दिन तरह तरह के कामों में मजे

مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾ سَلٰمٌ قف قَوْلًا

कर रहे होंगे। वे और उनकी पत्नियां सब जन्नत की छाँव में सिंहासन पर तकिये लगाए आराम कर रहे होंगे। उनके

مِّنۡ رَّبٍّ رَّحِيۡمٍ ﴿۵۸﴾ وَامۡتَازُوا الۡيَوۡمَ اَيُّهَا الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿۵۹﴾ اَلَمۡ اَعۡهَدۡ

लिए ताज़े फल होंगे और इसके अलावा जो कुछ भी वे चाहेंगे। उनके पक्ष में उनके मेहरबान परवरदिगार का दृश्य

اِلَيۡكُمۡ يٰبَنِىۡۤ اٰدَمَ اَنۡ لَّا تَعۡبُدُوا الشَّيۡطٰنَ‌ۚ اِنَّهٗ لَـكُمۡ عَدُوٌّ

केवल सलाम होगा। और ए दोषीओ तुम ज़रा उनसे अलग तो हो जाओ। अव्लादे आदम हम तुम्हें इस बात का अहद

مُّبِيۡنٌ ﴿۶۰﴾ وَّاَنِ اعۡبُدُوۡنِىۡ‌ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿۶۱﴾ وَلَقَدۡ اَضَلَّ

नहीं लिया था कि खबरदार शैतान की पूजा न करना कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। और मेरी इबादत करना कि यही

مِنۡكُمۡ جِبِلًّا كَثِيۡرًا‌ؕ اَفَلَمۡ تَكُوۡنُوۡا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۲﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِىۡ

सिराते मुस्तकीम और सीधा रास्ता है। इस शैतान ने तुम में से कई पीढ़ियों को गुमराह कर दिया है तो तुम भी बुद्धि का

كُنۡتُمۡ تُوۡعَدُوۡنَ ﴿۶۳﴾ اِصۡلَوۡهَا الۡيَوۡمَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡفُرُوۡنَ ﴿۶۴﴾ اَلۡيَوۡمَ

प्रयोग नहीं करोगे। यही वह जहन्नम है जिस का आप से दुनिया में वादा किया जा रहा था। आज उसी में जाओ कि

نَخۡتِمُ عَلٰٓى اَفۡوَاهِهِمۡ وَتُكَلِّمُنَاۤ اَيۡدِيۡهِمۡ وَتَشۡهَدُ اَرۡجُلُهُمۡ بِمَا كَانُوۡا

तुम हमेशा कुफ्र अपनाया करते थे। आज हम उनके मुंह पर मोहर लगा दें करेंगे और उनके हाथ बोलेंगे और उन के पैर

يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۶۵﴾ وَلَوۡ نَشَآءُ لَطَمَسۡنَا عَلٰٓى اَعۡيُنِهِمۡ فَاسۡتَبَقُوا

गवाही देंगे कि यह कैसे कार्यों को अंजाम दिया करते थे। और हम अगर चाहें तो उनकी आँखों को मिटा दें तो यह

الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبۡصِرُوۡنَ ﴿۶۶﴾ وَلَوۡ نَشَآءُ لَمَسَخۡنٰهُمۡ عَلٰى مَكَانَتِهِمۡ فَمَا

रास्ते की तरफ कदम बढ़ाते रहें लेकिन कहाँ देख सकते हैं। और हम चाहें तो खुद उन्हें ही बिल्कुल मस्ख कर दें

اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ؕ

जिसके बाद न आगे कदम बढ़ा सकें और न पीछे ही पलट कर वापस आ सकें। और हम जिसे लंबी उम्र देते हैं उसे

اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ

खिल्कत में बचपने की तरफ वापस कर देते हैं यह लोग समझते नहीं हैं। और हम अपने पैगम्बर को कविता की शिक्षा

وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى

नहीं दी और न कविता उसके शायाने शान है यह तो एक नसीहत और खुला हुवा रौशन कुरान है। ताकि उसके द्वारा

الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا

जीवित व्यक्तियों को अज़ाबे इलाही से डराएं और कुफ़्फ़ार पर हुज्जत तमाम हो। क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि

فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا

हमने उनके लाभ के लिए अपने कुदरत के हाथ से चौपाए पैदा कर दिए हैं तो अब यह उनके मालिक कहे जाते हैं।

يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

और फिर हम इन जानवरों राम कर दिया है तो कुछ से सवारी का काम लेते हैं और कुछ को खाते हैं। और उनके लिए

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ

जानवरों में कई फायदे हैं और पीने की चीजें भी हैं, तो यह शुक्रे खुदा क्यों नहीं करते हैं। और उन लोगों ने खुदा को

نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا

छोड़कर अन्य खुदा बना लिए है कि शायद उनकी मदद की जाएगी। हालांकि यह उनकी मदद की शक्ति नहीं रखते

نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ

हैं और यह उनके ऐसे लश्कर हैं जिन्हें खुद भी खुदा की बारगाह में हाज़िर किया जाएगा। इसलिए पैगम्बर आप

نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ

उनकी बातों से रंजीदा न हों हम वह भी जानते हैं जो यह छुपा रहे हैं और वह भी जानते हैं जो यह प्रकट कर रहे हैं।

قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ

तो क्या इंसान ने यह नहीं देखा कि हमने उसे नुतफे से बनाया है और वह एक बार हमारा खुला दुश्मन हो गया है। और

اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ

हमारे लिए मिस्ल बयान करता है और अपनी पैदाइश को भूल गया है कहता है कि इन गली हुई हड्डियों को कौन

الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ

जीवित कर सकता है। आप कह दीजिए कि जिसने पहली बार बनाया है वही ज़िन्दा भी करेगा और वह हर मख्लूक

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ

का बेहतर जानने वाला है। उसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग पैदा कर दी है तो तुम उससे सारी आग उज्ज्वल करते

بَلٰى ۚ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ

रहे हो। इसका हुक्म केवल यह है कि किसी वस्तु के बारे में यह कहने का इरादा कर ले कि हो जा और वह वस्तु हो

كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ

जाती है। इसलिये पाक व बेनियाज़ है वह खुदा के जिस के हाथों में हर वस्तु की सत्ता है और तुम सब उसी की

تُرْجَعُوْنَ۝٨٣

बारगाह में पलटा कर ले जाए जाओगे।

सूरह रहमान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

اَلرَّحْمٰنُ۝١ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ۝٢ خَلَقَ الْاِنْسَانَ۝٣ عَلَّمَهُ

वह खुदा बड़ा मेहरबान है। इस कुरान की शिक्षा दी है। आदमी बनाया है। और उसे बयान सिखाया है। सूरज और

الْبَيَانَ۝٤ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ۝٥ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ

चाँद सब उसी के निर्धारित गणना के साथ चल रहे हैं। और बूटीयां बेलें और पेड़ सब उसी का सजदा कर रहे हैं।

يَسْجُدٰنِ۝٦ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ۝٧ اَلَّا تَطْغَوْا فِي

उसने आकाश को बुलंद किया है और न्याय के तराज़ू की स्थापना की है। ताकि तुम लोग वज़न में हद से आगे न

الْمِيْزَانِ۝٨ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَ لَا تُخْسِرُوا

बढ़ो। और न्याय के साथ वज़न स्थापित करो और मापने में कम न तोलो। और उसी ने पृथ्वी को मनुष्य के लिए

الْمِيْزَانَ۝٩ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ۝١٠ فِيْهَا فَاكِهَةٌ

तैयार है। इसमें मेवे और वह खजूरें हैं जिनके खुशों पर गिलाफ चढ़े हुए हैं। वह दाने हैं जिनके साथ भुस होता है

وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿١١﴾ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾

और सुगंधित फूल भी हैं। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। उसने इन्सान को

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ

ठेकरे की तरह खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया है। और जिन्नात को आग के शोलों से बनाया है। अब तुम दोनों

كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ﴿١٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। वह चाँद और सूरज दोनों पूर्व और पश्चिम का मालिक है।

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾ فَبِاَيِّ

अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। उसने दो नदी बहाए हैं जो आपस में मिल जाते

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا

हैं। उनके बीच सीमा है कि एक दूसरे पर ज़्यादती नहीं कर सकते। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस

بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾ يَخْرُجُ

नेअमत से इनकार करोगे। इन दोनों नदियों से मोती और मूंगे बरामद होते हैं। अब तुम दोनों अपने रब की किस

مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾

किस नेअमत से इनकार करोगे। उसी के वे जहाज भी हैं जो नदी में पहाड़ों की तरह खड़े रहते हैं। अब तुम दोनों

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَـَٔاتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। जो भी धरती पर है सब नष्ट हो जाने वाले हैं। केवल तुम्हारे

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو

रब की जाति जो साहेबे जलाल और इकराम है वही बाकी रहने वाली है। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस

الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ

नेअमत से इनकार करोगे। आकाश और पृथ्वी में जो भी है सब उसी से सवाल करते हैं और वे हर दिन एक नई

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

शान वाला है। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। ऐ दोनों गिरोह हम जल्द ही

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तुम्हारी तरफ आकर्षित होंगे। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। ऐ गिरोहे

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ

जिन्नात और इन्सान यदि तुम में कुदरत हो कि आसमान और ज़मीन के अतराफ से बाहर निकल जाओ तो निकल

تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا

जाओ मगर याद रखो कि तुम कुव्वत और गलबे कि बिना नहीं निकल सकते हो। अब तुम दोनों अपने रब की

تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ

किस किस नेअमत से इनकार करोगे। तुम्हारे ऊपर आग हरी लौ और धूम्रपान छोड़ दिया जाएगा तो तुम दोनों

عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ

किसी तरह नहीं रोक सकते हो। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। फिर जब

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً

आसमान फट कर तेल की तरह लाल हो जाएगा। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार

كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ

करोगे। फिर उस दिन किसी इन्सान और जिन्नात से उसके पाप के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा। अब तुम

عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾

दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। दोषी व्यक्तियों तो अपनी नीशानी ही से पहचान लिए

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ

जाएंगे फिर माथे और पैरों से पकड़ लिए जाएंगे। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार

وَالْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ

करोगे। यही वह जहन्नम है जिसका मुजरिम इनकार कर रहे थे। अब उसके और उबलते पानी के बीच चक्कर

يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾

लगाते फिरेंगे। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। और जो भी अपने परवरदिगार

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ

की बारगाह में खड़े होने से डरता है इसके लिए दो दो बाग हैं। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से

جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَيِّ

इनकार करोगे। और दोनों बागों के पेड़ों की टहनियों से हरे भरे फलों से लदे होंगे। अब तुम दोनों अपने रब की

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

किस किस नेअमत से इनकार करोगे। इन दोनों में दो चश्मे जारी होंगे। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾ فَبِاَيِّ

नेअमत से इनकार करोगे। इन दोनों में हर मेवे के जोड़े होंगे। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ بَطَآئِنُهَا مِنْ

इनकार करोगे। ये लोग इन फरशों पर तकिया लगाए बैठे होंगे जिनके अस्तर अत्लस के होंगे और दोनों बागानों

اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

के मेवे बहुत करीब से प्राप्त कर लेंगे। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। उन

تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ

जन्नतों में सीमित दृष्टि वाली हूरें होंगी जिन्हें मनुष्य और जिन्नात में से किसी ने पहले छुआ भी नहीं होगा। अब

قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ

तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। वह हूरें ऐसी होंगी जैसे लाल याकूत और मूंगे।

الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ

अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। क्या एहसान का बदला एहसान के अलावा

جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

कुछ और भी हो सकता है। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। और इन दोनों के

تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अलावा दो बाग और होंगे। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। दोनों बहुत दर्जा

تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا

सरसब्ज़ और शादाब होंगे। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। इन दोनों बागानों

عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا

में भी दो जोश मारते हुए चश्मे होंगे। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। इन दोनों

فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ

बागानों में मेवे, खजूरें और अनार होंगे। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। इन

خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ

जन्नतों में नेक सीरत और खूबसूरत महिलाएं होंगी। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार

مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ

करोगे। वह हूरें जो खैमों के अंदर छुपी बैठी होंगी। अब तुम दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार

يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَ لَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

करोगे। उन्हें पहले किसी व्यक्ति या जिन्नात ने हाथ तक नहीं लगाया होगा। अब तुम दोनों अपने रब की किस

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

किस नेअमत से इनकार करोगे। जो लोग हरी कालीनों और बेहतरीन मसनदों पर टेक लगाए बैठे होंगे। अब तुम

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ

दोनों अपने रब की किस किस नेअमत से इनकार करोगे। बड़ा बा बरकत है आपके परवरदिगार का नाम जो

وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

साहेबे जलाल भी है और साहेबे इकराम है।

सूरह वाकिया

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ

जब प्रलय बरपा होगी। और इसके स्थापित होने में ज़रा भी झूठ नहीं है। वह उलट पलट कर देने वाली होगी। जब

رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ

पृथ्वी को ज़बरदस्त झटके लगेंगे। और पहाड़ बिल्कुल चूर चूर हो जाएगा। फिर कण बनकर फैल जाएंगे। और तुम

بَسًّا ﴿٥﴾ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ﴿٦﴾ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾

तीन गिरोह हो जाओ। फिर दाहिने हाथ वाले और क्या कहना दाहिने हाथ वालों का। और बाएं हाथ वाले और क्या

فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾ وَاَصْحٰبُ

पूछना है बाएं हाथ वालों का। और सबकत करने वाले तो सबकत करने वाले ही हैं। वही अल्लाह की बारगाह के

الْمَشْئَمَةِ ۚ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝٩ وَالسّٰبِقُوْنَ

मुकर्रब हैं। नेअमतों भरी जन्नतों में होंगे। बहुत से लोग अगले लोगों में से होंगे। और कुछ आखिर दूर के होंगे।

السّٰبِقُوْنَ ۝١٠ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝١١ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝١٢

मोती और याकूत से जुड़े हुए तख्तों पर। एक दूसरे के सामने तकिया लगाए बैठे होंगे। उनके आसपास हमेशा युवा

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝١٤ عَلٰى سُرُرٍ

रहने वाले बच्चे गर्दिश कर रहे होंगे। प्याले और टोटीवार कंटर और शराब के जाम लिए हुए होंगे। जिस से न सिरदर्द

مَّوْضُوْنَةٍ ۝١٥ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝١٦ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ

पैदा होगा और न होश गुम होंगे। और उनकी पसंद के मेवे लिए होंगे। और उन पक्षियों का मांस जिसकी उन्हें इच्छा

وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝١٧ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ مِّنْ

होगी। और बड़ी आंखों वाली हूरें होंगी। जैसे छिपे होती है। यह सब वास्तव में उनके आअमाल की जज़ा और

مَّعِيْنٍ ۝١٨ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝١٩ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا

उसका पुरस्कार होगा। वहाँ न कोई लग्वियात सुनेंगे और न पाप की बातें। केवल हर तरफ सलाम ही सलाम होगा।

يَتَخَيَّرُوْنَ ۝٢٠ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝٢١ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝٢٢

और दाहिनी ओर वाले असहाब क्या कहना उन दाहिनी ओर वाले असहाब का। कांटे बगैर की बेर। लदे गथे हुए

كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝٢٣ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢٤

केले। फैले हुए छाए। फव्वारे से गिरते हुए पानी। बहुत ज़ियादा फलों के बीच होंगे। जिनका सिलसिला न खत्म होगा

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا

और न उन पर कोई रोक टोक होगी। और ऊंचे प्रकार के गद्दे होंगे। वास्तव में इन हूरों को हमने बनाया है। तो उन्हें

سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٧﴾ فِيْ سِدْرٍ

सदैव नया बनाया। यह कुंवारी और आपस में हमजोलियाँ होंगी। यह सब दाहिने हाथ वाले असहाब के लिए हैं।

مَّخْضُوْدٍ ﴿٢٨﴾ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ﴿٢٩﴾ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ﴿٣٠﴾ وَّمَآءٍ

जिनका एक समूह पहले लोगों का है। और एक गिरोह अंतिम लोगों का है। और बाएं हाथ वाले तो उनका क्या

مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا

पूछना। गर्म गर्म हवा और उबलता पानी। काले काले धुएं का साया। जो न शांत हो और न अच्छा लगे। यह वही लोग

مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾

हैं जो पहले बहुत आराम की ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। और बड़े बड़े गुनाहों पर जोर दे रहे थे। और कहते थे कि जब हम

فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾ عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ

मर जाएँ और धूल और हड्डी हो जाएंगे तो हमें फिर से उठाया जाएगा। क्या हमारे पिता भी उठाए जाएंगे। आप कह

مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاَصْحٰبُ

दीजिए कि अव्वलीन और आख़ेरीन सब के सब। एक निर्धारित दिन वादा के स्थल पर जमा किए जाएंगे। इसके बाद

الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾

तुम ए गुमराहो और झुठलाने वालों। थोहड़ के पेड़ के खाने वाले होगे। फिर उस से अपने पेट भरोगें। फिर उस पर

وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا

उबलता पानी पियोगे। फिर इस तरह पियोगे जिस तरह प्यासे ऊंट पीते हैं। यह कयामत के दिन उनकी महेमानदारी का

قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ

सामान होगा। हम तुमको पैदा कीया है तो फिर दोबारा पैदा करने की पुष्टि क्यों नहीं करते। क्या तुम ने उस शुक्राणु को

الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۚ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا

देखा है जो रहम में डालते हो। उसे तुम पैदा करते हो या हम पैदा करने वाले हैं। हम तुम्हारे बीच मौत को मुकद्दर कर

وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾ اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ اِنَّ

दिया है और हम इस बात से आजिज़ नहीं हैं। कि तुम जैसे और लोग पैदा करें और तुम्हें इस हालत में फिर से इजाद

الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۚ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ

करें जिसे तुम जानते नहीं हो। और तुम पहली खिलकत को तो जानते हो तो इस पर विचार क्यों नहीं करते हो। उस

مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾

दाने को भी देखा है जो तुम पृथ्वी में बोते हो। उसे तुम उगाते हो या हम उगाने वाले हैं। यदि हम चाहें तो उसे चूर चूर

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾

बना दें तो तुम बातें ही करते रह जाओ। के हम तो बड़े घाटे में रहे। बल्कि हम तो वंचित ही रह गए। क्या तुमने उस

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾

पानी को देखा है जो तुम पीते हो। उसे तुमने बादल से बरसाया है या उसके बरसाने वाले हम हैं। अगर हम चाहते तो

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا

उसे खारा बना देते तो फिर तुम हमार शुक्रिया क्यों नहीं अदा करते हो। क्या तुमने उस आग को देखा है जिसे लकड़ी

تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ

से निकालते हो। उसके पेड़ को तुमने पैदा किया है या हम उसके पैदा करने वाले हैं। हमने उसे याददहानी का ज़रीया

نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ

और यात्रियों के लिए लाभ का सामान करार दिया है। अब आप अपने अज़ीम परवरदिगार के नाम की तसबीह करें।

بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ

और मैं तो तारों की मंज़िलों की कसम खा कर कहता हूँ। और तुम जानते हो कि यह कसम बहुत बड़ी कसम है। यह

مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا

बड़ा मोहतरम कुरान है। जिसे एक पोशीदा किताब में रखा गया है। उसे पाक व पाकीज़ा लोगों के अलावा कोई छू भी

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ

नहीं सकता है। यह रब्बुल आलमीन की तरफ से नाज़िल किया गया है। तो क्या तुम लोग इस कलाम से इनकार करते

اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ

हो। और तुम ने अपनी रोजी यही करार दे रखी है कि उसका इनकार करते रहो। फिर ऐसा क्यों नहीं होता कि जब

تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾

जान गले तक पहुंच जाए। और तुम उस वक्त देखते ही रह जाओ। और हम तुम्हारी तुलना मरने वाले से करीब हैं

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِىْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ

लेकिन तुम देख नहीं सकते हो। इसलिए तुम किसी के दबाव में नहीं हो और बिल्कुल आज़ाद हो। तो उस आत्मा को

الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا

क्यों नहीं पलटा देते हो अगर अपनी बात में सच्चे हो। फिर अगर मरने वाला मुकर्रबिन में से है। तो इसके लिए

فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِىْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَ

शानदार, खुशबू दार फूल और नेमतों के बागात हैं। और अगर असहाबे यमीन में से है। तो असहाबे यमीन की तरफ से

اَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ

तुम्हारे लिए सलाम है। और अगर झुठलाने वालों और गुमराहों में से है। तो उबलते हुए पानी की मेहमानी है। और

جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ

जहन्नम में झोंक देने की सज़ा है। यही वह बात है जो बिल्कुल सत्य और निश्चित है। इसलिए अपने अज़ीम

الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾

परवरदिगार के नाम की तसबीह करते रहो।

सूरह जुमअ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

یُسَبِّحُ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ الۡمَلِکِ الۡقُدُّوۡسِ الۡعَزِیۡزِ

धरती और आकाश का हर कण उस खुदा की तसबीह कर रहा है जो बादशाह पाकीज़ा सिफत, और साहेबे इज़्ज़त

الۡحَکِیۡمِ ﴿۱﴾ ہُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡہُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡہِمۡ

और साहेबे हिकमत है। उस खुदा ने मक्का वालों में एक रसूल भेजा है कि उन्हीं में से था कि उनके सामने आयात

اٰیٰتِہٖ وَیُزَکِّیۡہِمۡ وَیُعَلِّمُہُمُ الۡکِتٰبَ وَالۡحِکۡمَۃَ ۚ وَاِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ

की तिलावत करे, उनके नकशो को शुद्ध बनाए और उन्हें पुस्तक और ज्ञान की शिक्षा दे हालांकि ये लोग बड़ी खुली

لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ﴿۲﴾ۙ وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِہِمۡ ؕ وَہُوَ الۡعَزِیۡزُ

हुई गुमराही में पीड़ित थे। और उनमें से उन लोगों की तरफ भी जो अभी उन से मिले हुवे नहीं हैं और वह साहेबे

الۡحَکِیۡمُ ﴿۳﴾ ذٰلِکَ فَضۡلُ اللّٰہِ یُؤۡتِیۡہِ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰہُ ذُو الۡفَضۡلِ

सम्मान भी है और साहेबे हिकमत भी। यह एक अनुग्रह खुदा है वह जिसे चाहता है प्रदान करता है और वह बड़े

الۡعَظِیۡمِ ﴿۴﴾ مَثَلُ الَّذِیۡنَ حُمِّلُوا التَّوۡرٰىۃَ ثُمَّ لَمۡ یَحۡمِلُوۡہَا کَمَثَلِ

महान कृपा का मालिक है। उन लोगों का उदाहरण जिन पर तौरात का बार रखा गया और वह उसे उठा न सके उस

الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ

गधे का उदाहरण है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो यह सबसे खराब उदाहरण उन लोगों का है जो आयात

اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ

इलाही को झुठलाते है और खुदा किसी ज़ालिम कौम का निर्देश नहीं करता है। आप कह दीजिए कि यहूदी अगर

زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ

तुम्हारा विचार यह है कि सभी मनुष्यों में तुम ही अल्लाह के दोस्त हो तो अगर अपने दावे में सच्चे हो तो मौत की

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦ وَ لَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ

तमन्ना करो। और यह हरगिज़ मौत की इच्छा नहीं करेंगे कि उनके हाथों ने पहले बहुत कुछ किया है और

عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ

अल्लाह ज़ालिमों की परिस्थितियों को खूब जानता है। आप कह दीजिए कि तुम जो मौत से बच रहे हो वह खुद

مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا

तुमसे मिलने वाली है तब तुम उसकी बारगाह में पल्टाए जाओगे जो हाज़िर और गायब सब का जानने वाला और

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِىَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ

वह तुम्हें सूचित करेगा कि तुम दुनिया में क्या कर रहे थे। ईमान वालो जब तुम्हें शुक्रवार के दिन नमाज़ के लिए

الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ

पुकारा जाए तो ज़िक्रे खुदा कि तरफ दौड़ पड़ो और कारोबार बंद कर दो कि यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ

जानने वाले हो। फिर जब नमाज़ खत्म हो तो पृथ्वी में फैल जाओ और फज़्ले खुदा की खोज करो और खुदा को

وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠

बहुत याद करो कि शायद इसी तरह तुम्हें मुक्ति प्राप्त हो। और ए पैग़म्बर ये लोग जब व्यापार या खेल-कूद को

وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوًا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا

देखते हैं तो उसकी ओर दौड़ पड़ते हैं और आप को अकेला खड़ा छोड़ देते हैं आप उनसे कह दीजिए कि भगवान

عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١

के पास जो कुछ भी है वह इस खेल और व्यापार से बहरहाल बेहतर है और वह अच्छा रिज़्क देने वाला है।

सूरह मुल्क

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۝١ ۙ الَّذِيْ خَلَقَ

बा-बरकत है वह जात जिसके हाथों में सारा मुल्क है और वह हर वस्तु पर कादिर और मुख्तार है। वह मौत और

الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

जीवन को इसलिए बनाया है ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुम में अच्छे अमल के आधार पर सबसे अच्छा कौन है

الْغَفُوْرُ ۝٢ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰی فِیْ خَلْقِ

और वह साहेबे इज़्ज़त भी है और लख्शने वाला भी है। उसी ने सात आसमान तह-ब-तह पैदा किए हैं और तुम रहमान

الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰی مِنْ فُطُوْرٍ ۝٣ ثُمَّ

की खिल्कत में किसी तरह का अंतर न देखोगे तो फिर दोबारा निगाह उठाकर देखो कहीं कोई दरार दिखाई देती है।

ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝٤

उसके बाद बार बार निगाह डालो देखो निगाह थक कर पलट आएगी लेकिन कोई दोष न दिखाई देगा। हम ने

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا

आसमाने दुनिया को चिरागों से सजाया है और उन्हें शैतानों को संगसार करने का जरिया बना दिया है और उनके लिए

لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝٥ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जहन्नम का अज़ाब अलग मोहय्या कर रखा है। और जिन लोगों ने अपने परवरदिगार का इनकार किया है उनके

بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٦ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا

लिए जहन्नम का अज़ाब है और वही सबसे खराब अनजाम है। जब भी वह उसमें डाले जाएंगे उसकी चीख सुनेंगे

لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝٧ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا

और वह जोश मार रहा होगा। बल्कि करीब होगा कि जोश की तीव्रता से फट पड़े जब भी उसमें किसी समूह को

فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ۝٨ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا

डाला जाएगा तो उसके दारोगा उनसे पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था। तो वे कहेंगे कि

نَذِيْرٌ ۚ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ

आया तो था लेकिन हमने उसे झुठला दिया और यह कह दिया कि अल्लाह ने कुछ भी नाज़िल नहीं किया है तुम लोग

ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ۝٩ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ

खुद बहुत बड़ी गुमराही से मुब्तेला हो। और फिर कहेंगे कि अगर हम बात सुन लेते और समझते होते तो आज

السَّعِيْرِ ۝١٠ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١١ اِنَّ

जहन्नम वालों में न होते। तो उन्होंने खुद अपने पाप को कबूल कर लिया तो अब जहन्नम वालों के लिए तो रहमते

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝١٢ وَاَسِرُّوْا

खुदा से दूरी ही दूरी है। बेशक जो लोग बिना देखे अपने परवरदिगार का खौफ रखते हैं उनके लिए बख्शिश और

قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝١٣ اَلَا يَعْلَمُ

महान इनाम है। और तुम लोग अपनी बातों को धीरे से कहो या ज़ोर से खुदा तो सीनों के भेदों को जानता है। और

مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝١٤ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ

पयदा करने वाला नहीं जानता है जबकि वह लतीफ भी है और खबीर है। उसी ने तुम्हारे लिए जमीन को नरम बना

ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۭ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ۝١٥ ءَ

दिया है कि उसके अतराफ में चलो और रिज़्के खुदा तलाश करो फिर उसी की ओर कब्रों से उठ कर जाना है। क्या

اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاۗءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ۝١٦

तुम आसमानों में हुकूमत करने वाले की तरफ से संतुष्ट हो गए कि वे तुम्हें जमीन में धंसा दे और वे तुम्हें गर्दिश ही देती

اَمۡ اَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِی السَّمَآءِ اَنۡ یُّرۡسِلَ عَلَیۡکُمۡ حَاصِبًا ؕ

रहे। या तुम उसकी तरफ से इस बात से सुरक्षित हो गए कि वह तुम्हारे ऊपर पत्थरों की बारिश कर दे फिर तुम्हें बहुत

فَسَتَعۡلَمُوۡنَ کَیۡفَ نَذِیۡرِ ﴿۱۷﴾ وَلَقَدۡ کَذَّبَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ

जल्द मालूम हो जाएगा कि मेरा डराना कैसा होता है। और उन से पहले वालों ने भी झुठलाया है तो देखो कि उनका

فَکَیۡفَ کَانَ نَکِیۡرِ ﴿۱۸﴾ اَوَلَمۡ یَرَوۡا اِلَی الطَّیۡرِ فَوۡقَهُمۡ صٰٓفّٰتٍ

अंजाम कितना भयानक हुआ है। क्या इन लोगों ने अपने ऊपर इन पक्षियों को नहीं देखा है जो पर फैला देते हैं और

وَّیَقۡبِضۡنَ ۚ مَا یُمۡسِکُهُنَّ اِلَّا الرَّحۡمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِکُلِّ شَیۡءٍۭ بَصِیۡرٌ ﴿۱۹﴾

समेट लेते हैं कि उन्हें इस फिज़ा में अल्लाह के अलावा कोई नहीं संभाल सकता कि वही हर वस्तु की निगरानी करने

اَمَّنۡ هٰذَا الَّذِیۡ هُوَ جُنۡدٌ لَّکُمۡ یَنۡصُرُکُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ الرَّحۡمٰنِ ؕ اِنِ

वाला है। क्या यह जो तुम्हारी सेना बना हुआ है खुदा की तुलना में तुम्हारी मदद कर सकता है - वास्तव में कुफ़्फ़ार

الۡکٰفِرُوۡنَ اِلَّا فِیۡ غُرُوۡرٍ ﴿۲۰﴾ اَمَّنۡ هٰذَا الَّذِیۡ یَرۡزُقُکُمۡ اِنۡ اَمۡسَکَ

केवल धोखा में पड़े हुए हैं। या यह तुम्हें रोज़ी दे सकता है अगर खुदा अपनी रोज़ी को रोक ले – हकीकत यह है कि

رِزۡقَهٗ ۚ بَلۡ لَّجُّوۡا فِیۡ عُتُوٍّ وَّنُفُوۡرٍ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنۡ یَّمۡشِیۡ مُکِبًّا عَلٰی وَجۡهِهٖۤ

ये लोग नाफरमानी और घृणा में डूब गए हैं। क्या वह शख्स जो मुंह के बल चलता है वह अधिक निर्देश प्राप्त है या जो

اَهۡدٰۤی اَمَّنۡ یَّمۡشِیۡ سَوِیًّا عَلٰی صِرَاطٍ مُّسۡتَقِیۡمٍ ﴿۲۲﴾ قُلۡ هُوَ الَّذِیۡۤ

सीधे-सीधे सिराते मुस्तकीम पर चल रहा है। आप कह दीजिए कि खुदा ही ने तुम्हें पैदा किया है और उसी ने तुम्हारे

اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا

लिए कान, आंख और दिल करार दिए हैं मगर तुम बहुत कम शुक्रिया करने वाले हो। कह दीजिए कि वही वह है जो

تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

पृथ्वी में तुम्हें फैला दिया है और उसी कि तरफ तुम्हें इकट्ठा करके ले जाया जाएगा। और यह लोग कहने लगे कि

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ

अगर तुम लोग सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा। आप कह दीजिए कि इल्म अल्लाह के पास है और मैं तो केवल

عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ

स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ। फिर जब उस कयामत के अज़ाब को करीब देखेंगे तो काफिरों के चेहरे बिगड़ जाएगा

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُلْ

और उनसे कहा जाएगा कि यही वह अज़ाब है जिस के तुम ख्वास्तगार थे। आप कह दीजिए कि तुम्हारा क्या खयाल

اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِىَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِىَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ

है कि खुदा मुझे और मेरे साथियों को हलाक कर दे या हम पर रहम करे तो इन काफिरों का दर्दनाक कयामत से

مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ

बचाने वाला कौन है। कह दीजिए कि वही ख़ुदाए रहमान है जिस पर हम ईमान लाए और इसी पर हमारा भरोसा है

فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ

फिर जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि खुली हुई गुमराहि में कौन है। कह दीजिए कि तुम्हारा क्या खयाल है अगर

مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ۝٣٠

तुम्हारा सारा पानी भूमिगत हो जाए तो तुम्हारे लिए चश्मे का पानी बहा कर कौन लाएगा।

सूरह नबा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝١ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۝٢ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ

ये लोग आपस में किस चीज के बारे में सवाल कर रहे हैं। बड़ी खबर के बारे में। जिसके बारे में उनमें मतभेद

مُخْتَلِفُوْنَ ۝٣ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝٤ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝٥ اَلَمْ نَجْعَلِ

है। कुछ नहीं जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा। और खूब मालूम हो जाएगा। क्या हम ने पृथ्वी का फर्श नहीं

الْاَرْضَ مِهٰدًا ۝٦ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۝٧ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۝٨ وَّجَعَلْنَا

बनाया है। और पहाड़ों की मीखें नहीं स्थापित की हैं। और हम ही ने तुमको जोड़ा बनाया है। और तुम्हारी नींद

نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝٩ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۝١٠ وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ

को आराम का सामान करार दिया है। और रात को पर्दा पोश बनाया है। और दिन को वक्ते रोज़गार ठहराया है।

مَعَاشًا ۝١١ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝١٢ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا

और तुम्हारे सरों पर सात मजबूत आसमान बनाए हैं। और एक भड़कता हुआ चिराग बनाया है। और बादलों में

وَّهَّاجًا ﴿١٣﴾ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا

से मूसलाधार पानी बरसाया है। ताकि उसके द्वारा दाने और घास बरआमद करें। और घने घने बागात पैदा करें।

وَّنَبَاتًا ﴿١٥﴾ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٦﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾ يَّوْمَ

वास्तव में फैसले का दिन मोअय्यन है। जिस दिन सूर फूंका जाएगा और तुम सब फौज दर फौज आओगे। और

يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ

आसमान के रास्ते खोल दिए जाएंगे और दरवाज़े बन जाएंगे। और पहाड़ों को जगह से हरकत दे दी जाएगी और

اَبْوَابًا ﴿١٩﴾ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ

वह रेत जैसे हो जाएंगे। वास्तव में नरक उनकी घात में है। वह सरकशों का अंतिम ठिकाना है। इसमें वह मुद्दतों

مِرْصَادًا ﴿٢١﴾ لِّلطَّاغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٢﴾ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ

रहेंगे। न ठंडक का मज़ा चख सकेंगे और न किसी पीने की चीज का। अलावा खोलते पानी और पीप के। यह

فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾ جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾ اِنَّهُمْ

उनके आमाल का मुकम्मल बदला है। यह लोग हिसाब व किताब की उम्मीद ही नहीं रखते थे। और उन्होंने

كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَيْءٍ

हमारी आयात की बाकाएदा तकज़ीब की है। और हम ने हर वस्तु को अपनी किताब में जमा कर लिया है। अब

اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾ فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ

तुम अपने कार्यों का स्वाद चक्खो और हम सजा के अलावा कोई वृद्धि नहीं कर सकते। वास्तव में साहेबाने

مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ لَا

तकवा के लिए सफलता की मंजिल है। उद्यान है और अंगूर। नौखेज़ दोशीज़ाएँ हैं और सब हमसिन। और

يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ

छलकते हुए पैमाने। वहां न कोई लग्व बात सुनेंगे न गुनाह। यह तुम्हारे रब की तरफ से हिसाब की हुई अता है

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

और तुम्हारे कर्मों की जज़ा। वह आकाश और पृथ्वी और उन के बीच का परवरदिगार है जिसके सामने किसी

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ

को बात करने का यारा नहीं है। जिस दिन रूहुल कुद्स और मलाएक सफ बांधकर खड़े होंगे और कोई बात

الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ

भी न कर सकेगा अलावा इसके जिसे रहमान अनुमति दे दे और सूक्ष्म बात करे। यही सत्य दिन है तो जिसका

مَاٰبًا ﴿٣٩﴾ اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ

जी चाहे अपने रब की तरफ ठिकाना बना ले। हम ने तुम को एक करीबी अज़ाब से डराया है जिस दिन इन्सान

يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

अपने किए धरे को देखेगा और काफिर कहेगा कि ऐ काश मैं खाक हो गया होता।

सूरह आअ़ला

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

سَبِّحِ اسۡمَ رَبِّکَ الۡاَعۡلَی ۙ﴿۱﴾ الَّذِیۡ خَلَقَ فَسَوّٰی ۪ۙ﴿۲﴾ وَالَّذِیۡ قَدَّرَ

अपने सबसे ऊंचे रब के नाम की तसबीह करो। जिसने पैदा कीया है और सही बनाया है। जिसने भाग्य निश्चित

فَهَدٰی ۪ۙ﴿۳﴾ وَالَّذِیۡۤ اَخۡرَجَ الۡمَرۡعٰی ۪ۙ﴿۴﴾ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحۡوٰی ؕ﴿۵﴾

किया है और फिर निर्देश दिया है। जिसने चारा बनाया है। फिर इसे सूखा करके काले रंग का कूड़ा बना दिया।

سَنُقۡرِئُکَ فَلَا تَنۡسٰۤی ۙ﴿۶﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰہُ ؕ اِنَّهٗ یَعۡلَمُ الۡجَهۡرَ وَمَا

हम निकट भविष्य में तुम्हें इस तरह पढ़ाएँगें कि भूल न सकोगे। मगर यह कि खुदा ही चाहे कि वह हर ज़ाहिर

یَخۡفٰی ؕ﴿۷﴾ وَنُیَسِّرُکَ لِلۡیُسۡرٰی ۚ﴿۸﴾ فَذَکِّرۡ اِنۡ نَّفَعَتِ الذِّکۡرٰی ؕ﴿۹﴾

और छिपी रहने वाली चीज़ को जानता है। और हम तुम को आसान रास्ते की तौफीक देंगे। इसलिए लोगों को

سَیَذَّکَّرُ مَنۡ یَّخۡشٰی ۙ﴿۱۰﴾ وَیَتَجَنَّبُهَا الۡاَشۡقَی ۙ﴿۱۱﴾ الَّذِیۡ یَصۡلَی النَّارَ

समझाओ अगर समझाने का लाभ हो। जल्द ही खौफे खुदा रखने वाला समझ जाएगा। और बदबखत उससे

الۡکُبۡرٰی ۚ﴿۱۲﴾ ثُمَّ لَا یَمُوۡتُ فِیۡهَا وَلَا یَحۡیٰی ؕ﴿۱۳﴾ قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ تَزَکّٰی ۙ﴿۱۴﴾

किनारा कशी करेगा। जो बहुत बड़ी आग में जलने वाला है। फिर न इसमें जीवन है न मौत। वास्तव में पाकीज़ा

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْاٰخِرَةُ

रहने वाला सफल हो गया। जिसने अपने रब के नाम की तसबीह की और फिर नमाज़ पढ़ी। लेकिन तुम लोग

خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٧﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ

जिंदगानी दुनिया को मुकद्दम रखते हो। जबकि आखेरत बेहतर और हमेशा रहने वाली है। यह बात सभी पहले

وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾

सहीफों में भी मौजूद है। इब्राहीम (अ.स.) के सहीफों में भी और मूसा (अ.स.) के सहीफों में भी।

सूरह शम्स

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا

आफताब और उसके प्रकाश की कसम। और चाँद की कसम जब वह उसके पीछे चले। और दिन की कसम जब

جَلّٰىهَا ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ﴿٤﴾ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ﴿٥﴾

वह प्रकाश बखशे। और रात की कसम जब वह उसे ढक ले। और आकाश की कसम और जिसने उसे बनाया है।

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ﴿٦﴾ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ﴿٧﴾ فَاَلْهَمَهَا

और पृथ्वी की कसम और जिसने उसे बिछाया है। और नफ्स की कसम और जिसने उसे सही किया है। फिर बुराई

فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝٨ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝٩ وَقَدْ خَابَ مَنْ

और तक़वा का निर्देश दिया है। बेशक वह सफल हो गया जिसने नफ्स को शुद्ध बना लिया। और वह नामुराद हो

دَسّٰىهَا ۝١٠ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۝١١ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۝١٢

गया जिसने उसे दूषित कर दिया है। समूद ने अपनी सरकशी के आधार पर रसूल को झूठलाया। जब उनका

فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝١٣ فَكَذَّبُوْهُ

बदबखत उठ खड़ा हुआ। तो खुदा के रसूल ने कहा कि खुदा की ऊँटनी और उसकी सिंचाई का खयाल रखना।

فَعَقَرُوْهَا ۚ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝١٤ وَلَا

तो उन लोगों ने उसको झुठलाया और उसकी कूंचें काट डाली तो खुदा ने उनके गुनाह के कारण उन पर अज़ाब

يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝١٥

नाज़िल कर दिया और उन्हें बिल्कुल बराबर कर दिया। और उसे उसके अंजाम का कोई डर नहीं है।

सूरह क़द्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝١ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝٢ لَيْلَةُ

वास्तव में हमने इसे शबे कदर में भेजा है। और आप क्या जानें यह शबे कद्र क्या चीज़ है। शबे कद्र हज़ार

الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝٣ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ

महीनों से बेहतर है। इसमें मलाएक और रूहुल कुद्स खुदा के इज़्न के साथ सभी मुद्दों को लेकर नाज़िल

رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝٤ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝٥

होते हैं। यह रात सुबह होने तक सुरक्षा ही सुरक्षा है।

सूरह ज़िल्ज़ाल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝٢

जब पृथ्वी ज़ोरों के साथ भूकंप में आ जाएगी। और वह सारे खजाने निकाल डालेगी। और मनुष्य कहेगा कि

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝٣ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝٤ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى

इसे क्या हो गया है। उस दिन वह अपनी खबरें बयान करेगी। कि तुम्हारे परवरदिगार ने उसे इशारा किया है।

لَهَا ۝٥ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝٦ فَمَنْ

उस दिन सारे इंसान गिरोह दर गिरोह कब्रों से निकलेंगे ताकि अपने कार्यों को देख सकें। फिर जिस व्यक्ति ने

يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝٧ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝٨

कण बराबर नेकी की है वह उसे देखेगा। और जिसने कण बराबर बुराई की है वह उसे देखेगा।

सूरह आ़दियात

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

وَالۡعٰدِیٰتِ ضَبۡحًا ۙ﴿۱﴾ فَالۡمُوۡرِیٰتِ قَدۡحًا ۙ﴿۲﴾

फर्राटे भरते हुए तेज़ रफतार घोड़ों की कसम। जो टाप मारकर चिंगारियां उड़ाने वाले हैं। फिर सुबह दम हमला करने वाले हैं। फिर

فَالۡمُغِیۡرٰتِ صُبۡحًا ۙ﴿۳﴾ فَاَثَرۡنَ بِہٖ نَقۡعًا ۙ﴿۴﴾ فَوَسَطۡنَ بِہٖ

गुबारे युद्ध उड़ाने वाले नहीं। और दुश्मन की भीड़ में दर आने वाले हैं। वास्तव में इन्सान अपने परवरदिगार के लिए बड़ा नाशुक्रा है।

جَمۡعًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لِرَبِّہٖ لَکَنُوۡدٌ ۚ﴿۶﴾ وَاِنَّہٗ عَلٰی ذٰلِکَ

और वह खुद भी इस बात का गवाह है। और वह माल के प्यार में बहोत सख्त है। क्या उसे पता नहीं है कि जब मुर्दों को कब्रों से

لَشَہِیۡدٌ ۚ﴿۷﴾ وَاِنَّہٗ لِحُبِّ الۡخَیۡرِ لَشَدِیۡدٌ ؕ﴿۸﴾

निकाला जाएगा। और दिल के रहस्यों को ज़ाहिर कर दिया जाएगा। तो उनका परवरदिगार उस दिन के हालात से खूब वाकिफ होगा।

सूरह काफ़िरून

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

قُلۡ یٰۤاَیُّهَا الۡکٰفِرُوۡنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ ۙ﴿۲﴾ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ

आप कह दीजिए कि ए काफ़िरो। मैं इन खुदाओं की इबादत नहीं कर सकता जिनकी तुम पूजा करते हो।

اَعۡبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدۡتُّمۡ ۙ﴿۴﴾ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ؕ﴿۵﴾

और न तुम मेरे खुदा की इबादत करने वाले हो। और न मैं तुम्हारे माबूद की पूजा करने वाला हूँ। और न

لَکُمۡ دِیۡنُکُمۡ وَلِیَ دِیۡنِ ۧ﴿۶﴾

तुम मेरे माबूद के इबादत गुज़ार हो। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन है।

सूरह नस्र

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰہِ وَالۡفَتۡحُ ۙ﴿۱﴾ وَرَاَیۡتَ النَّاسَ یَدۡخُلُوۡنَ فِیۡ دِیۡنِ

जब खुदा की मदद और जीत की मंजिल आ जाएगी। और आप देखेंगे कि लोग दीने खुदा में सेना दर सेना

اللهِ اَفۡوَاجًا ۙ﴿۲﴾ فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَاسۡتَغۡفِرۡهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

भर्ती हो रहे हैं। तो अपने रब की हम्द की तसबीह करें और उस से माफी करें कि वह बहुत ज़्यादा तौबा

تَوَّابًا ۧ﴿۳﴾

कबूल करने वाला है।

सूरह तौहीद

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۙ﴿۳﴾ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ

ए रसूल कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह सत्य और बेनियाज़ है। उसकी न कोई औलाद है

كُفُوًا اَحَدٌ ۧ﴿۴﴾

और न पिता। और न उसका कोई कफ़ो और हमसर है।

सूरह फ़लक़

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا

कह दीजिए कि मैं सुबह के मालिक की शरण चाहता हूँ। सभी जीव की बुराई से। और अंधेरी रात की

وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا

बुराई से जब उसका अंधेरा छा जाए। और गंडों पर फूंकने वालियों की बुराई से। और हर हसद करने

حَسَدَ ۧ﴿۵﴾

वाले की बुराई से जब भी वह ईर्ष्या करे।

सूरह नास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बनामे खुदाए रहमान और रहीम

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ

ए रसूल कह दीजिए कि मैं मनुष्य के परवरदिगार की शरण चाहता हूँ। जो सभी लोगों का मालिक और

الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۪﴿۴﴾ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ

बादशाह है। सारे इंसानों का माबूद है। शैतानी वस्वसों की बुराई से जो नामे खुदा सुनकर पीछे हट जाता

الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۧ﴿۶﴾

है। और जो लोगों के दिलों में वस्वसे पैदा कराता है। वह जिन्नात में से हो या मनुष्य में से।